परामर्श प्रमुख

श्री कैलाशचंदजी जैन, झाँसी

श्री जिनेन्द्रकुमारजी जैन, अहमदाबाद

प्रधान संपादक

सिंघई राजेन्द्र जैन, 9424013136

सह संपादिका

श्रीमती अनुपमा-रजनीश जैन, 9009066884

श्रीमती साधना-सुनील जैन, 8602696165

कोषाध्यक्ष

सुधेशकुमार जैन, 9827254111

प्रबंध संपादक

राजेन्द्रकुमार जैन, सायकलवाले 9425353972

खुशालचंद जैन, 9302123879

कोमलचंद जैन, 9329524227

संयोजक एवं प्रकाशक

बाहुबली जैन, 9827247847

समाज के श्रेष्ठीजनों से पुन: सादर अनुरोध है कि समाज की एकमात्र सामाजिक पत्रिका गोलालारीय दर्शन के निरंतर प्रकाशन के लिए आप शिरोमणि संरक्षक, परम संरक्षक, संरक्षक, विशेष सहयोगी बनकर पत्रिका को आर्थिक संबल प्रदान करें।

शिरोमणि संरक्षक, परम संरक्षक अपना संक्षिप्त परिचय सपत्नीक फोटो सहित एवं संरक्षक तथा विशेष सहयोगी सदस्य अपना संक्षिप्त परिचय फोटो सहित भेजे ताकि प्रकाशन किया जा सके।

सदस्यता शुल्क

शिरोमणि संरक्षक (अ.जा.)	21000/-
परम संरक्षक (अ.जा.)	11000/-
संरक्षक (अ.जा.)	5100/-
विशेष सहयोगी (अ.जा.)	2100/-
सहयोगी सदस्य	1100/-
सहयोग राशि	500/-

आप 'गोलालारीय दर्शन' के बैंक खाते में सहयोग राशि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के खाता क्रं. 63048875855 IFSC Code: SBIN0030134 में चेक द्वारा ही जमा कर स्लीप की फोटोकॉपी व अपना नवीन फोटो मय जानकारी के हीरालाल एण्ड संस, 16 महारानी रोड व कार्यालय पते पर अवश्य भेजें ताकि आपको रसीद भेज कर आपका विवरण प्रकाशित किया जा सके।
नोट - 8 मार्च 2014 से अन्य शहरों से जमा की जाने वाली राशी पर बैंक शुल्क न्यूनतम 50 रु. कर दिया है।

अत: बायोडाटा शुल्क मल्टीसिटी चेक के द्वारा ही पत्रिका के पते पर भेजे।

विज्ञापन दर (कलर)

अंतिम पेज	15000/-
फुल पेज (अंदर)	11000/-
1/2 पेज	5000/-
1/4 पेज	3000/-
मांगलिक बधाई फोटो सहित	2000/-
शोक संदेश फोटो सहित	1000/-
बॉयोडाटा फोटो सहित	350/-

बायोडाटा, समाचार व अन्य कोई जानकारी पत्रिका में प्रकाशित करने हेतु गोलालारीय दर्शन 64, न्यू देवास रोड़, इन्दौर अथवा श्री राजेन्द्रकुमार जैन हीरालाल एण्ड संस, 16 महारानी रोड़, इन्दौर पर भेंजे।

संपादकीय... बस ! अब और नहीं

11 वर्ष पहले सामाजिक गतिविधियों के साथ समाज के प्रतिभाशाली बच्चों व विवाह योग्य प्रत्याशियों की जानकारी गोलालारीय समाज के प्रत्येक परिवार को सुगम रुप से प्राप्त हो इस पावन उद्देश्य को आत्मसात कर समाज की एकमात्र पत्रिका **"गोलालारीय दर्शन"** का प्रकाशन प्रारंभ किया गया था।

2000 प्रतियों से प्रारंभ किया गया हमारा सफर आज देशभर में 4200 गोलालारीय परिवारों तक पहुँच गया है। इस प्रयास में हमारे क्षेत्रीय प्रतिनिधियों का योगदान अतुलनीय है। पत्रिका प्रकाशन के लिये पाठन योग्य सामग्री के साथ धन की भी अत्यंत आवश्यकता होती है। हमें खेद के साथ कहना पड़ता है कि हमारे 4200 जागरुक परिवारों में से सिर्फ 339 परिवारों से ही सदस्यता शुल्क प्राप्त हुआ है जिसमें 25/- से 2000/- तक सहयोग देने वाले परिवार 221 है व शिरोमणि संरक्षक (21000/-) से विशेष सहयोगी (2100/-) तक सदस्यता शुल्क ग्रहण करने वाले 118 परिवार है। आप स्वयं आत्मालोकन करे कि अपने समाज के लिये आपने अपनी सार्मथ्य अनुसार इस प्रयास में कितनी मदद की है ?

हम हृदय से उन परिवारों का आभार मानते हैं जिन्होंने अपने परिवार के मांगलिक/धार्मिक व परिजन की स्मृति में हमें विज्ञापन देकर **गोलालारीय दर्शन** को प्राणवायु दी है।

स्थानीय प्रतिनिधियों के माध्यम से हमने अपनी समाज के परिवारों से पत्रिका की सदस्यता से जोड़ने के प्रयास किये परन्तु अधिकांश समाजजनों की निष्क्रियता हमारे सभी प्रवासों पर भारी पड़ी। उक्त परिदृश्य में हमारा ऐसा मानना है कि कुछ परिवार मुखिया आज भी यहीं भावना रखते है कि **गोलालारीय दर्शन** पत्रिका प्राप्त करना उनका नैतिक अधिकार है और इस अधिकार के लिए उनका कोई दायित्व नहीं है शायद यहीं सोच हमारे समाज की किसी भी संस्था को सुदृढ़ नहीं होने देगी। हमें गंभीरता से विचार करना चाहिए कि आखिर कितने वर्षों तक कोई संस्था नि:शुल्क पत्रिका भेज सकेगी जबकि उसके आय के स्रोत सीमित हो। एक ना एक दिन संस्था के अस्तित्व पर सवाल उठना प्रारंभ हो जावेंगे ? आज वह दिन आ गया है जब हमने दिल से नहीं दिमाग से यह कठोर निर्णय लिया है कि आगामी अंको से हम उन परिवारों को पत्रिका भेजना बंद कर देंगे जिन्होंने गत 10 वर्षों में कोई भी राशि सदस्यता शुल्क के रुप में जमा नहीं करायी है। हमारा दायित्व सिर्फ उन परिवारों तक ही सीमित रह पायेगा जिनके द्वारा आजीवन सदस्यता के रुप में सहयोग प्राप्त हुआ है।

आज के दौर में 1100/-, 2100/-, 5100/- व 11000/- की राशि बहुत बड़ी रकम नहीं है। इससे भी कहीं अधिक राशि हम अपने परिवार के छोटे से कार्यक्रम में खर्च कर देते है। धार्मिक व मांगलिक कार्यों पर हम बढ़ चढ़कर धन खर्च कर देते है परंतु **"गोलालारीय दर्शन"** को सहयोग देने के लिए हम अपना दिल क्यों नहीं खोल पाते हैं। अचरज तब होता है कि समाज का हर वर्ग अपनी मातृसंस्था के उत्थान के लिए इतने उदासीन क्यो है जबकि हम सबकी पहचान हमारे गोलालारीय समाज से ही है।

आज के परिवेश में जब हर समाज अपनी संस्था को सुदृढ़ बनाने में लगा है तो हम इतने उदासीन क्यों हो रहे है ? हमारी उदासीनता हमारे समाज को ढलान की ओर ले जा रही है, हमारा मजबूत आधार दरकता जा रहा है। युवा पीढ़ी अपने नाते रिश्तेदारों से अनभिज्ञ हो रही है। परिवार के बुजुर्ग हमारे बीच रहकर हमें अपने संबंधियों का बोध करा रहे हैं आगे परिस्थिति कितनी प्रतिकूल होगी हमें इस पर गंभीरता से विचार कर सुधार हेतु सकारात्मक प्रयास करना होगा। अपनी मातृसंस्थाओं को जीवित रखना एक समूह नहीं अपितु सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। बिना आर्थिक सुदृढ़ता के कोई भी संस्था लंबे समय तक संघर्ष नहीं कर सकती है। यदि हमें हमारी संस्थाओं को समाज हित में जीवित रखना है तो अपने पूर्वाग्रह को त्याग कर अपने सार्मथ्य अनुसार समाज की एकमात्र पत्रिका **"गोलालारीय दर्शन"** के सदस्य बनकर सुचारु संचालन में सहयोगी बने। सदस्यता शुल्क की पूर्ण जानकारी इसी पृष्ठ पर अंकित है।

50 वर्ष पूर्ण होने पर पंचकल्याणक महोत्सव साआनंद संपन्न

इन्दौर अरविन्द जैन। मध्यप्रदेश की धार्मिक एवं औद्योगिक नगरी इन्दौर के परदेशीपुरा दिगम्बर जैन मंदिर के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महामुनिराज के आशीर्वाद से उनके ज्येष्ठ व आज्ञानुवर्ती शिष्य मुनि श्री 108 प्रशांतसागरजी व 108 निर्वेगसागरजी महाराज ससंघ सानिध्य में 26 मई से 31 मई तक श्री 1008 मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक जिनबिम्ब प्रतिष्ठा, त्रिगजरथ रथ यात्रा एवं विश्वशांति महायज्ञ महोत्सव सुगनादेवी परिसर में साआनंद संपन्न हुआ। महोत्सव में प्रतिदिन नित्य पूजन, अभिषेक पश्चात अनेक आयोजनों में समाजजनों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। इस अवसर पर भगवान के माता पिता बनने का सौभाग्य इन्दौर गोलालारीय समाज के ट्रस्टी श्री कमलचंद-संध्या जैन को प्राप्त हुआ। कार्यक्रम के अंतर्गत महाराजश्री ने परदेशीपुरा जैन मंदिर को अतिशय क्षेत्र कहकर संबोधित किया। इन्दौर के इतिहास में किसी मंदिर के 50 वर्ष पूर्ण होने और मंदिरजी में 3 बार पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव होने का सौभाग्य परदेशीपुरा जैन मंदिर समाज को मिला है। साआनंद संपन्न कार्यक्रम पर महोत्सव अध्यक्ष श्री अरविंद जैन ने सभी सहभागियों व महोत्सव में पधारें समाजजनों का हृदय से आभार व्यक्त किया।

इन्दौर के पूर्वोत्तर क्षेत्र के स्कीम नं. 78 में मंदिरजी से पास ही संत सदन, स्वाध्याय हॉल, प्रवचन हॉल, औषधालय, लायब्रेरी एवं आहार कक्ष हेतु बहुपयोगी भवन निर्माण का शिलान्यास परम पूज्य अंर्तमना मुनि श्री प्रसन्नसागरजी महाराज के सानिध्य में संपन्न हुआ। इस अवसर पर बहुउद्देशीय संत निवास के लिए समाज श्रेष्ठीयों ने बढ़चढ़कर राशी प्रदान करने की घोषणा की। कार्यक्रम को सफल बनाने में लिए स्कीम नं. 78 के समग्र जैन समाज के साथ साथ नगर के बाहर से भी श्रेष्ठीजन पधारें थे। कार्यक्रम का कुशल नेतृत्व परम सम्मानीय तरुण भैयाजी द्वारा किया गया। मंदिर अध्यक्ष श्री दिनेश कुमार जैन ने कार्यक्रम में पधारें सभी श्रेष्ठीजनों का आभार व्यक्त किया।

गंजबासौदा समाज के चुनाव संपन्न

श्री गोलालारीय दिगम्बर जैन समाज गंजबासौदा के संगठन हेतु दिनांक 22.06.2019 को सर्वसम्मति से चुनाव संपन्न हुए जिसमें * संरक्षक मंडल - डॉ. डी.के. जैन, श्री शांतिकुमार जैन, श्री अशोक कुमार गुड़िया, श्री विजयकुमार इंजीनियर * अध्यक्ष - श्री शिखरचंद जैन 'शिखर' * कार्याध्यक्ष - श्री नेमीचंद जैन एडवोकेट * कोषाध्यक्ष - श्री अहमेन्द्र कुमार जैन * सचिव - श्री अशोक कुमार जैन वर्धमान * उपाध्यक्ष - श्री राकेश कुमार सर्राफ, श्री रमेशचंद भंडारी * संगठन मंत्री - सनत कुमार भंडारी निर्वाचित हुए।

* समाज के माननीय सदस्यों से सादर अनुरोध है कि आपके द्वारा गोलालारीय दर्शन पत्रिका में किसी भी मद में आपके द्वारा नगद/चेक द्वारा राशि जमा कराई गई हो (सीधे बैंक खाते में इन्दौर कार्यालय या क्षेत्रीय प्रतिनिधियों) और आपको रकम की रसीद प्राप्त नही हो पाई हैं तो आप हमें 9424013136 पर दोपहर 3 से रात 10 बजे तक सूचित कर सकते हैं ताकि आपको शीघ्र ही रसीद भिजवाने की व्यवस्था की जा सके। गोलालारीय दर्शन में सदस्यता शुल्क का विवरण पत्रिका पर लगे पते के स्टीकर पर उल्लेखित हैं। किसी भी प्रकार के सुधार के लिए आप चर्चा करते समय स्टीकर पर अंकित सदस्यता क्रमांक अवश्य बताएं ताकि उचित सुधार संभव हो सके।

* वर्तमान में 4200 परिवारों को पत्रिका नियमित भेज रहे हैं इन पतो में किसी भी प्रकार का परिवर्तन कराना चाहते हैं तो पत्रिका के वॉटसएप नं. 94067-44064 पर पोस्ट करे। यह फोन चर्चा हेतु उपलब्ध नहीं है।